नई दिल्ली में 10–11 मार्च, 2018 को आयोजित किए जा रहे राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सम्मेलन (National Legislator's Conference) *में माननीय अध्यक्ष का उद्घाटन भाषण*

1. इस राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सम्मेलन (National Legislator's Conference) में आप सबका स्वागत करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। आज जब भारत एक प्रमुख विश्व शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है एवं नवीन भारत के निर्माण की अनिवार्यता के बारे में अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए सांसदों और देशभर से आये विधायकों का यह सम्मेलन एक बहुत अच्छा मंच है।

2. आदरणीय प्रधानमंत्री जी का ऊर्जापूर्ण व्यक्तित्व सदा ही ईमानदारी व उत्साह से राष्ट्रहित में हम सबको अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने की प्रेरणा देता है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने विकास और सुशासन के उच्च मानदंड स्थापित किए हैं।

3. मुझे विभिन्न राज्यों से हमारे मुख्यमंत्रियों, केन्द्र के माननीय मंत्रियों, विधान सभा अध्यक्षों, विधान परिषद् के सभापतियों, माननीय संसद सदस्यों, राज्यों और संघराज्य क्षेत्रों की विधान सभाओं एवं विधान परिषदों के माननीय सदस्यों का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है। मुझे विश्वास है कि जनप्रतिनिधिगण इन सत्रों में पूरी लगन से भाग लेंगे और कार्यसूची की मदों के विभिन्न पहलुओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी देंगे।

4. मैं पैनल के विशिष्ट सदस्यों, विषय–विशेषज्ञों, अतिथियों और मीडिया से आए मित्रों का भी हार्दिक स्वागत करती हूं।

5. इस सम्मेलन की थीम विकास पर आधारित है। मुझे गर्व है कि "We for development" से हमें अनेकता में एकता का आभास होता है। We का अर्थ है हम सभी जनप्रतिनिधिगण, विकास के कार्य करने वाली एजेंसियां, एवं कार्यपालिका। सभी इसमें ठीक उसी प्रकार समाहित हैं जिस प्रकार नदियां समुद्र में समाहित हो जाती हैं। हम सबका केवल एक ही ध्येय है। विकास हम सबको साथ मिलकर करना है। विकास सबका होना चाहिए। विकास का विचार gender neutral, party neutral, region neutral, sector neutral है। "We for development" is, in fact, a belief when we come together we can create an even better world. We make it easy for everybody to get involved—whether at home, school or work—by offering resources to help and create positive social change for our community and around the world. हम सब जानते हैं कि हम सबकी प्राथमिकता अन्त्योदय है और ये सब प्रयास अन्त्योदय के लिए ही है। जैसे कहा गया है किः–

''आकाश पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।

सर्व देव नमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति।।''

(All raindrops falling from sky ultimately meet their end in the ocean; prayers offered to all gods ultimately reach the one Lord.) Similarly, our efforts will definitely benefit the last person in the row.

6. यह जाग्रत एंव जीवन्त लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था का लक्षण है कि वह अपनी संवैधानिक भूमिका का निर्वहन करने वाले सभी संस्थागत रचनाओं के दायित्वों का समय–समय पर आत्मावलोकन करे। हमारी संवैधानिक व्यवस्था में विधि निर्माताओं के रूप में सांसदों एवं विधायकों की बड़ी भूमिका है। विकासात्मक विधायी कार्य अपने–आप में बहुत बड़ा क्षेत्र है। चूंकि मैं लम्बे समय से जनप्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रही हूं, मेरे मन में अक्सर यह ख्याल आता है कि as policy makers, we should come together, introspect, think, discuss about different issues of national interest including local issues, about different plans, policies & Schemes, learn from each other how policies can be optimally utillised for the maximum benefits at the grassroot

for Antyodaya. यही सब सोचकर मैंने इस कांफ्रेंस का आयोजन किया है और आप सबने यहां आकर इस सोच को बल दिया है।

7. आप सबको मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि मैं ऐसे कार्यक्रम यथासंभव करवाती हूं। वर्ष 2016 में हमने ''राष्ट्रीय महिला जनप्रतिनिधि सम्मेलन करवाया था'' जो बहुत सफल रहा था। इसके बाद महिला जनप्रतिनिधि सम्मेलन के माध्यम से विकास के क्षेत्र में हुई प्रगति के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए ब्रिक्स महिला सांसद मंच की बैठक तथा दक्षिण एशियाई देशों के अध्यक्षों के शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस प्रकार के सम्मेलनों से सुशासन में अपनाई जाने वाली सर्वोत्तम पद्धतियों और विचारों के आदान–प्रदान में मदद मिलती है। मैं इसे उभरते नेतृत्व को पहचानने और उन्हें भावी दायित्वों के लिए तैयार करने का अवसर भी मानती हूं।

8. लोक सभा अध्यक्ष बनने के बाद इसी विचार को अपने सांसद साथियों के साथ विभिन्न विषयों पर interaction, different policies and issues पर नीति विशेषज्ञों के साथ सार्थक चर्चा करने तथा उनकी इच्छानुसार सदन में बहस के लिए विषय विशेष पर पर्याप्त जानकारी हो, इस उद्देश्य से मैंने अध्यक्षीय शोध कदम (SRI) की शुरूआत की है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जुलाई, 2015 में SRI का शुभारंभ किया था। यह बहुत संतोषजनक ढंग

से कार्य कर रहा है और हमलोग समय–समय पर विशिष्ट विषयों को लेकर मिलते रहते हैं और अब तक हमने 25 के करीब कार्यशालाएं आयोजित की हैं।

9. यह सम्मेलन विकास की गाथा में जनप्रतिनिधियों को शामिल करने और उन्हें इसके साथ जोड़ने के हमारे प्रयासों का एक भाग है। मेरा यह मानना है जो मेरे राजनैतिक, सामाजिक जीवन का निष्कर्ष भी है कि निर्वाचित जनप्रतिनिधि विकास योजनाओं में सरकार को अधिक लक्ष्यकेन्द्रित तो कर ही सकता है, साथ ही योजनाओं की सफलता को भी कई गुणा बढ़ा सकता है। सांसद और विधायक विभिन्न प्रकार की समितियों के सदस्य होते हैं जहां सरकार की विकासात्मक योजनाओं पर दृष्टि रखी जाती है और उनका विश्लेषण होता है। जनप्रतिनिधि के नाते, सांसद एवं विधायकों का प्रभाव क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है। विभिन्न प्रकार की समस्याओं की उनकी समझ व्यावहारिक एवं परिस्थितिजन्य होती है जिसका संबंध विभिन्न विभागों से हो सकता है। इसमें तीन पक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं – 1. योजनाओं की जानकारी, 2. विभागों की भूमिका और 3. जनाकांक्षा। निर्वाचित जनप्रतिनिधि की ये योग्यताएं उनके सामाजिक, राजनीतिक लक्ष्यों की समाज के व्यापक हित में सफलता सुनिश्चित करती है। निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के सतर्क एवं जागरूक होने से प्रशासनिक कौशल बढ़ता है और विभिन्न स्तरों पर जवाबदेही सुनिश्चित होती है और जनता को तो उसका लाभ मिलता है।

10. वर्ष 2022 का ''न्यू इंडिया'' का स्वप्न तभी पूर्ण होगा जब देश के हर जिले के हर गांव में शिक्षा और विकास की पूंजी पहुंचेगी। नीति आयोग द्वारा 101 most aspirational districts की पहचान एवं transformation की योजना की शुरूआत की गई है। जब सबसे पिछड़े इन जिलों में सामाजिक और आर्थिक हालात सुधरेंगे तो देश के सकल विकास को बहुत बल मिलेगा। इस सपने को सच करने में सांसदों की भूमिका है ही, पर विधायकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। नीति आयोग ने Aspirational Districts की पहचान, उनकी आवश्यकताएं और उनमें विकास के ढांचे के निर्माण की योजना पर विस्तार से काम किया है और उन जिलों में जो initiatives लिए गए हैं या जिनकी आवश्यकता है, उसकी प्रगति का ब्यौरा दिया है। इस कांफ्रेंस के केन्द्र–बिन्दु में Aspirational Districts के विकास हेतु विधायकों और जनप्रतिनिधियों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। Aspirational Districts के विकास के लिए मुख्यतः शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि उत्पादन, वित्तीय समावेश और कौशल विकास ऐसे 4 विषयों को लेकर Group Discussion किया जा रहा है। इस Group Discussion से हमारे जनप्रतिनिधियों को यह ठोस जानकारी मिलेगी कि विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्या approach रखे, कैसे strategy बनाए और किस तरह से Action Plan बनाकर विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करे।

11. विधायक केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं एवं स्थानीय प्रशासन के बीच पुल का काम करते हैं। मैं अपने संसदीय क्षेत्र के कुछ उदाहरण आपके साथ साझा करती हूं। मेरे संसदीय क्षेत्र इन्दौर में बहुत सारे तालाब हैं जिनमें वर्षा का जल जमा होता है, तो खेती में सुविधा होती है। परंतु वे तालाब इतने गहरे नहीं थे और उनमें पर्याप्त मात्रा में पानी इकट्ठा नहीं हो पाता था। तालाबों के गहरीकरण कैसे हो, इसके लिए अपने क्षेत्र के लोगों से बात की, तो उन्होंने कहा कि हम श्रमदान करेंगे परंतु आप कलेक्टर से यह अनुमति दिलवा दीजिए कि वह मिट्टी हम अपने खेतों में डालेंगे। मुझे यह बात अच्छी लगी और मैंने तुरंत कलेक्टर से इसकी अनुमति दिलवाई। लोगों ने खुशी–खुशी श्रमदान किया और तालाब भी गहरे हो गए और यह एहसास पक्का हुआ कि अगर मिल–बैठकर समस्याओं को समझा जाए, उन पर चिंतन किया जाए तो कई समस्याएं स्थानीय स्तर पर ही आसानी से हल हो जाती हैं। ऐसा ही एक विषय प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से संबंधित है। मैंने देखा कि इस योजना के तहत गांव की बाहरी सीमा तक तो सड़क आ जाती है पर गांव वालों की सुविधा हेतु पंचायत तक, स्कूल तक, आंगनबाड़ी केन्द्र तक एवं दो गांवों के बीच inter connect करने वाले सड़क की कमी से वहां का जीवन कठिन हो जाता है। यह कमी स्थानीय विधायकों एवं जनप्रतिनिधियों के पहलों से पूरी हो सकती है। यह बात हरेक विकास योजना पर लागू होती है।

12. वर्तमान समय डिजिटल टेक्नोलॉजी का है। हर पॉलिसी की जानकारी, इलाके की जानकारी, राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय मामलों की जानकारी बटन दबाते ही मिलती है। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। हमारे पास अपने क्षेत्र का भी हर प्रकार का डाटा होता है और हमें इनका इस्तेमाल करना है ताकि समावेशी विकास हो सके। Technology के माध्यम से हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारे इलाके में लोग विभिन्न पॉलिसीज का लाभ उठा पा रहे हैं कि नहीं, कहीं लाभ से वंचित तो नहीं रह गए हैं। जैसे UPaAI (Unified Planning and Analysis Interface) App हाल ही में लांच हुआ है जिसमें संसद सदस्य अपने संसदीय क्षेत्र और MPLAD fund किस प्रकार खर्च हो रहा है, पर नज़र रख सकते हैं। इसके अतिरिक्त उनके क्षेत्र से जुड़ी समस्त जानकारियां इस एप में होंगी। कितने स्कूल हैं, कितने अस्पताल हैं, डॉक्टरों और अध्यापको की कितनी कमी हैं, कितने बेरोजगार हैं इत्यादि। मुझे खुशी है कि कुछ सांसदों ने इसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। मैं चाहती हूं कि विधायकों की उपयोग के लिए इसी प्रकार की कोई तकनीक राज्यों में भी बने।

13. मैं देख रही हूं कि अच्छी संख्या में महिला जनप्रतिनिधि भी यहां उपस्थित हैं। आप सब भारत की करोड़ों महिलाओं के लिए प्रेरणा भी हैं और उनकी आशाओं–आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं। महिला सशक्तिकरण का

केन्द्र–बिन्दु आर्थिक आत्मनिर्भरता है क्योंकि स्वावलम्बन, आत्मविश्वास को जागृत करता है।

14. आज भारत सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए वचनबद्ध है। हमारी सारी नीतियां, योजनाएं SDG को समाहित करते हुए अन्त्योदय के लिए लक्षित है। उसमें आप सभी की अति महत्वपूर्ण भूमिका है। उस भूमिका के प्रति आप सब सचेत हैं और उसकी प्राप्ति की दिशा में निरंतर काम कर रहे हैं। आजकल बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि, स्वच्छ भारत, पक्का टॉयलेट, सोच से शौचालय, उज्ज्वला, आरोग्य, स्कूल चले हम इत्यादि जन–जन की जुबान पर है क्योंकि आज सबने इसके लिए प्रयास किया है। लोगों को समझ है कि ये योजनाएं उनके हित में हैं और अब वे इन योजनाओं के टॉर्च बियरर (torch bearer) बन गए हैं। कुछ अन्य योजनाएं जैसे Digital India, Make in India, Stand Up India, Start Up India, Adarsh Gram Yojana, Skill Development इत्यादि SDG को आगे ले जाते हुए game changer साबित हो रही हैं। यह निश्चय ही संकेत है कि ''न्यू इंडिया'' का स्वप्न अब दूर नहीं।

15. इन्हीं सब विकास के विषय, उनमें जनप्रतिनिधि के रूप में हमारी जिम्मेदारी के विषय पर आज और कल हम लोग परस्पर अंतरसंवाद करेंगे। इस विचार मंथन से कुछ दिशा मिलेगी, कुछ नए अनुभव एवं सुझाव सामने आएंगे,

जो सबके लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। हमलोग यहां राष्ट्रनिर्माण में अपनी भूमिका के चिंतन के लिए ही एकत्रित हुए हैं और मैं यहां कहना चाहूंगी कि "Living together is beginning, keeping together is progress and working together is success."

16. मैं ऋग्वेद के अंतिम श्लोक से ही अपनी वाणी को विराम देती हूं:–

''समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानं अस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।''

(United be your purpose, harmonious be your feelings, collected be your mind, in the same way as all the various aspects of the universe exist in togetherness, wholeness.)

————————